

इस्लाम में मोक्ष (3 का भाग 1): मोक्ष क्या है?

रेटिंग:

विवरण:

श्रेणी: [लेख इस्लाम की मान्यताएं आस्था और अन्य इस्लामी मान्यताओं के छह स्तंभ](#)

द्वारा: Aisha Stacey (© 2010 IslamReligion.com)

पर प्रकाशति: 04 Nov 2021

अंतिम बार संशोधति: 04 Nov 2021

इस्लाम यह शक्ति देता है कि मोक्ष की प्राप्ति केवल ईश्वर की प्रार्थना से ही संभव है। व्यक्ति को ईश्वर पर विश्वास करना चाहिए और उसके निर्देशों का पालन करना चाहिए। यही संदेश मूसा और यीशु सहित सभी पैगंबरों ने दिया है। वह केवल एक ही है जो पूजा के योग्य है। एक ईश्वर, बिना किसी साथी पुत्रों, या पुत्रियों के। मोक्ष और उससे अनंत सुख की प्राप्ति सच्ची पूजा से ही प्राप्त की जा सकती है।



इसके अतिरिक्त इस्लाम यह शक्ति भी देता है कि मनुष्य पाप रहित पैदा होता है और इसलिए उसका स्वाभाविक झुकाव केवल ईश्वर की पूजा ही है (बिना कनिहीं मध्यस्थों के)। इस पाप रहित अवस्था को बनाए रखने के लिये मनुष्य जात को ईश्वर के निर्देशों का पालन करना चाहिए और एक सच्चा न्यायप्रिय जीवन बताने का प्रयत्न करना चाहिए। अगर हम पाप में लपित हो जाएँ, तो केवल एक उपाय है कि हम सच्चे मन से पश्चाताप करें और फिर ईश्वर से क्षमा की प्रार्थना करें। जब कोई व्यक्ति पाप करता है तो वह अपने आप को ईश्वर की कृपा से दूर कर देता या कर देती है, लेकिन सच्चा पश्चाताप उसे वापस ईश्वर के पास ले आता है।

मोक्ष एक शक्तिशाली शब्द है जिसमें शब्दकोश में बचाव होना या वनिष्ट होने, किसी कठिनाई, या किसी बुराई से मुक्तिपाने के अर्थ में परिभाषित किया गया है। धर्म की दृष्टि से इसका अर्थ पाप और उसके दुष्परिणामों से रक्षा है। विशेषकर, ईसाई धर्म में यह जीसस के पश्चाताप और मुक्ति से संबंधित है। इस्लाम में मोक्ष का अलग ही सिद्धांत है। इसमें यह नरक की अग्नि से मुक्ति है, जबकि यह ईसाई धर्म के कुछ मूलभूत सिद्धांतों को अस्वीकार करता है और स्पष्ट रूप से कहता है कि मोक्ष

उस सबसे कृपालु, ईश्वर के प्रत्यूपूर्ण समर्थन से ही प्राप्त होता है।

“जो ईश्वर का स्मरण करते हैं (सदैव, और प्रार्थनाओं में) खड़े हुए, बैठे हुए, और लेटे हुए, और गहराई से धरती और स्वर्ग के सृजन के बारे में सोचते हैं, (कहते हुए), “मेरे ईश्वर ! आपने यह (सब) व्यर्थ ही नहीं बनाए हैं, आपकी जय हो! (आप महान हैं उन सबसे जिन्हें वे आपके साथ साथी की तरह जोड़ते हैं)। हमें अग्नि की प्राणांतक पीड़ा से बचाएँ। ” (कुरआन 3:191)

ईसाई मत के अनुसार, मनुष्य जातू को बगिड़ी हुई और पापग्रस्त माना गया है। मनुष्य के अस्तित्व के मूल में पाप होने सदिधांत कहता है कि मनुष्य जातू पहले ही आदम के पाप से कलंकित है और इस तरह ईश्वर से वमिख है, और उसे एक तारणहार (मुक्त करनेवाला) की आवश्यकता है। दूसरी तरफ इस्लाम, अस्तित्व के मूल में पाप होने और मानव जातू पैदाइशी पापी होने के ईसाई वचार को खारजि करता है।

मासूम बच्चों के पापग्रस्त होने का वचार ही एक आस्तकि को बलिकूल बेतुका सा लगता है, जो जानता है कि इस्लाम मनुष्य के नरिमाण के मूल में क्षमा होने की बात मानता है पाप के होने की नहीं। इस्लाम के अनुसार मानव जातू शुचिता की अवस्था में जन्म लेती है, वह पाप रहति अवस्था होती है, और स्वाभावकि है कि ईश्वर की पूजा और प्रशंसा में वशिवास करती है। लेकनि साथ ही मनुष्य जातू को स्वतंत्र सोचने की शक्ति भी प्राप्त हुई है और इसलए वह गलतयिों भी कर सकती है और पाप भी; यहाँ तक कि वह बड़े दुष्टपूर्ण कार्य भी कर सकती है।

जब भी कोई व्यक्ति पाप करता है, वह अकेला ही उस पाप का जमिमेदार होता है। हर व्यक्ति अपने क्रियाकलाप का जमिमेदार होता है। परिणाम स्वरूप, कोई भी व्यक्ति जो इस संसार में आया है आदम और हव्वा की गलतयिों का जमिमेदार नहीं है। ईश्वर कुरआन में कहते हैं:

“और कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा।” (कुरआन 35:18)

आदम और हव्वा ने गलती की, उन्होंने सच्चे दिल से पश्चाताप किया, और ईश्वर ने अपनी अथाह (असीमति) समझ-बूझ के साथ उन्हें क्षमा किया। मानव जातू का भाग्य पीढ़ियों दर पीढ़ी दंडति होने का नहीं है। पति के दुष्कर्मों का हसिाब पुत्रों को नहीं देना होता।

“तब उन दोनों ने उस पेड़ का खाया, इसलए उनके गुप्त अंग उन्हें दिखाई देने लगे, और उन्होंने स्वयं को ढकने के लयि अपने ऊपर स्वर्ग की पत्तयिां लगा लीं। इस तरह आदम ने अपने ईश्वर की अवज्ञा की, और गलत राह पर चला गया। तब ईश्वर ने उसे चुना, और उसकी तरफ मुड़े और क्षमा किया और मार्गदर्शन किया।” (कुरआन 20:121-122)

सबसे प्रथम इस्लाम सिखाता है कि ईश्वर बहुत क्षमाशील है, और बार बार क्षमा करता है। गलतियाँ करना मनुष्य का स्वभाव है। कभी कभी गलतियाँ बनि सोचे समझे या बनि किसी बुरे आशय से की जाती हैं, लेकिन कभी हम जानबूझ कर भी पाप करते हैं और दूसरों को हानि पहुंचाते हैं। इसलिए मनुष्य होने के नाते हमें सतत क्षमा की आवश्यकता होती है।

इस संसार में जीवन बहुत परीक्षाओं और समस्याओं से घिरा होता है, लेकिन ईश्वर ने मनुष्य जाति को इन समस्याओं में अकेला नहीं छोड़ा है। ईश्वर ने मनुष्य को बुद्धि दी है और विकल्प चुनने और निर्णय लेने का विकल्प दिया है। ईश्वर ने हमें मार्गदर्शन के उपदेश दिए हैं। हमारे सर्जक के रूप में, उसे हमारे स्वभाव का पता है और हमें उस सीधे सच्चे मार्ग पर चलने की सीख दी है जो अनंत सुख की ओर ले जाता है।

कुरआन ईश्वर का अंतिम पैगाम है और समूची मानव जाति के लिये लागू है; सब लोगों पर, सब स्थानों पर, सभी समयों पर। पूरी कुरआन में ईश्वर हमें पश्चाताप के लिये उसके पास जाने और क्षमा माँगने के लिये कहते हैं। यही मोक्ष का मार्ग है। यही वनिाश से हमारा बचाव है।

“और जो भी स्वयं पाप करता है या गलती करता है लेकिन बाद में ईश्वर से क्षमा माँगता है, वह अक्सर उस महान दयालु ईश्वर से क्षमा पाएगा” (कुरआन 4:110)

“और ओ मेरे लोगों! अपने मालिक से क्षमा माँगो और उससे पश्चाताप करो, वह तुम्हारे लिये (आकाश से) खूब बारिश भेजेगा, तुम्हारी शक्ति को और शक्ति देगा, इसलिए अपराधियों, ईश्वर के एक होने में अविश्वास करने वालों की तरह वापस मत जाओ।” (कुरआन 11:52)

“कहो: ‘ओ मेरे सेवकों जिन्होंने अपनी हठे पार की है (बुरे काम और पाप करके)! ईश्वर की दया से निराश मत हो, वाकई मैं ईश्वर सभी पाप माफ़ कर देता है। सच में, वह क्षमाशील है, सबसे दयालु है।” (कुरआन 39:53)

कुरआन केवल मार्गदर्शन की पुस्तक नहीं है, यह उम्मीद की कतिब है। इसमें ईश्वर का प्रेम, दया, और क्षमा बहुत स्पष्ट हैं और इस तरह मनुष्य जाति को स्मरण कराया गया है कि निराश होकर न बैठ जाएँ। किसी व्यक्ति ने कोई भी पाप क्यों न किया हो यदि वह धृढ़तापूर्वक क्षमा माँगने ईश्वर की शरण लेता है, तो उसका मोक्ष पाना निश्चिती है।

पैगंबर मुहम्मद ने पाप को हृदय को ढकने वाले काले धब्बे कहा है। उन्होंने कहा, "वाकई अगर कोई आसक्ति पाप करता है, एक काला धब्बा उसके दिल को ढक लेता है। अगर वह पश्चाताप करता है, पाप करना बंद कर देता है, उसका हृदय फिर साफ़ हो जाता है। और अगर वह पाप करना चालू

रखता है (पश्चाताप करने के बजाय) तो वह बढ़ते रहते हैं जब तक कि पूरा हृदय ही ढक नहीं जाता..."^[1]

उस मूल पाप के धब्बे के कारण इस्लाम में मोक्ष की आवश्यकता नहीं है। मोक्ष की आवश्यकता होती है क्योंकि मनुष्य जाति परिपूर्ण नहीं और उसे ईश्वर की कृपा और प्रेम की आवश्यकता होती है। मोक्ष के सिद्धांत को सही ढंग से समझने के लिये हमें मोक्ष से जुड़े अन्य वषियों को समझना चाहिए। ये हैं, ????? के महत्व को समझने की जरूरत, या ईश्वर एक ही है, और सच्चे दिल से कैसे माफ़ी मांगी जाए। इन वषियों पर हम अगले दो लेखों में बात करेंगे।

फ़ुटनोट:

[1]

????-????

इस लेख का वेब पता:

<https://www.islamreligion.com/hi/articles/3681>

कॉपीराइट © 2006-2020 सभी अधिकार सुरक्षित हैं। © 2006 - 2023 IslamReligion.com. सभी अधिकार सुरक्षित हैं।